दस मुहर्रम (शाम ग़रीबाँ)

रोज़े आशूरा पसे कत्ले इमामुल मुत्तक़ीं
मालो ज़र लूटा जलाए खेमाहाय शाहेदीन

एक क़नाते सोखता की आड़ में सब बीबियाँ
खाक पर बैठीं थीं बच्चों को लिए बादिल हज़ीं

एक तरफ़ बच्चे पड़े थे ग़श में भूख और प्यास से
सेरो सेराब उस तरफ़ होने लगीं फ़ौजे लईं

जानवर तक फौज के जब पा चुके आबो तआम
तब गिज़ा भेजी पए अतफ़ाल शाहनशाहेदीन

ज़ौजए हुर लेके मशके आब और कुछ रोटियाँ
फौजे आदा से गई जिस वक्त बच्चों के करीब

बीबियाँ संभझीं के आते हैं लईन फिर लूटने
हज़रत जैनब बसद अनदोह फरमाने लगीं

रोते रोते भूखे प्यासे बच्चे सोए हैं अभी
लूट लेना सुबह आकर क़ैद है हम सब यहीं

मैं हूँ बीबी ज़ौज़ए हुर लाई हूँ आबो तआम
बाअदब उसने कहा यूँ आके जैनब के करीं

है गुरस्ना और प्यासे तीन दिन से नौनेहाल
दीजिए पानी उन्हें या ख्वाहरे सुलताने दीन

रख दिया यह कहके फर्शे ख़ाक पर आबो तआम
और खुद भी सर झुका के बैठीं बालाए जमीन

देखते ही रोटियों के टुकड़े और पानी की मशक
हो गया आहो बुका का शोर ऐ 'फिक्रे' हज़ीन